फरीदाबाद
मजदूर समाचार

राहें तलाशने-बनाने के लिए मजदूरों के अनुभवों व विचारों के आदान-प्रदान के जरियों में एक जरिया

काम होगा तो मिलेंगे ही। मिलना तो बिना काम के होता है।

डाक पता : मजदूर लाईब्रेरी, आटोपिन झुग्गी, एन.आई.टी फरीदाबाद – 121001

नई सीरीज नम्बर 243 1/- सितम्बर 2008

दैनिक जीवन की कुछ सहज बातें

● बात प्यास से शुरू करते हैं। लगता है पृथ्वी पर जल से-जल में ही जीवन आया है। हमारे शरीर के लिये पानी बहुत महत्वपूर्ण है। प्यास लगना शरीर की जल के लिये पुकार होती है। प्यास बुझाने में जो आड़े आयें उन से पार पाने के प्रयास सहज क्रिया हैं। झिझकें नहीं कुछ पेय प्यास को मारते हैं, तन में जल की कमी करते हैं, इन से बचना बनता है।

● भूख के जरिये शरीर दर्शाता है कि भोजन की आवश्यकता है। बिना भूख भोजन करना शरीर को परेशान करना है। और भूख लगने पर नहीं खाना....... यह ध्यान में रखने की जरूरत है कि शरीर प्रतिदिन औसतन तीन लीटर तेजाब बनाता है। इसलिये भूख लगने पर भोजन नहीं करना पेट में घाव व अन्य रोगों को दावत देना है। "भूख नहीं है पर फिर भी भोजन करो" और "भूख लगी है पर रुको, समय होने दो" वाली बाधाओं को पहचानने की आवश्यकता है।

● पेशाब करने जैसी बात आज कितने गुणा-भाग लिये है यह चिन्तन की बात है। पेशाब के लिये अनुमति ? पेशाब के लिये स्थान ? पेशाब करने के लिये पैसा? पेशाब शरीर से अनावश्यक व हानिकारक तत्वों को बाहर निकालने का सहज साधन है। पेशाब रोकना शरीर का सन्तुलन बिगाड़ने के संग पथरी का खतरा लिये है।

● और, अब गन्दी कही जाने वाली टट्टी। हर व्यक्ति के शरीर में हर समय टट्टी रहती है..... भोजन-पाचन-निकास शरीर की सहज क्रिया है। टट्टी को लज्जा की वस्तु बनाना, टट्टी के लिये समय निर्धारित करना, टट्टी लगने पर रोकना तन और मन, दोनों के लिये आफत हैं। राहत के लिये स्कूल-दफ्तर-फैक्ट्री-बस-लोकल ट्रेन की तानाशाही में दरारें डालने के प्रयासों के संग-संग सोच बदलना भी आवश्यक है।

● पसीने से परहेज, ए सी की कामना रोगों का भण्डार है। पसीना शरीर की सफाई का एक महत्वपूर्ण जरिया है। पाउडर-क्रीम और एयरकन्डीशनर से बचना बनता है।

● सूर्योदय और सूर्यास्त दिन व रात की सीमायें हैं और शरीर रात को सोने के लिये ढला है। रात को अन्धेरे में नींद स्वास्थ्य के लिये अति आवश्यक है। रोशनी नींद के लिये हानिकारक है। रात को नींद में बाधक मजबूरियों आदि की पड़ताल आवश्यक है।

● थकान सन्देश होता है विश्राम के लिये। आराम की जरूरत महसूस हो उस समय स्वयं का हाँकना लफड़े लिये है। यूँ भी विश्राम जीवन में रंगत लाता है।

● जीव अवस्था अनुसार तन की महक लिये रहते हैं। यह महक तन-मन की सहज क्रिया का परिणाम होती है। सम्बन्धों में यह महकें एक महत्वपूर्ण भूमिका अदा करती हैं। साबुन-इत्र-अन्य रसायन इन महकों को मिटाते, छिपाते, बदलते हैं इसलिये इन से बचना चाहिए।

● चिड़िया घौंसले में कम ही रहती हैं। मनुष्य का स्वभाव भी इमारतों के अन्दर रहने का नहीं है। बाहर खुले में जितना विचरण कर सकें अच्छा है। प्राण-साँस के लिये खुले में रहने से बेहतर कुछ नहीं है। और फिर, सीमेन्ट-स्टील-पेन्ट की इमारतें तो वैसे भी बीमारी का घर हैं।

● अधिक समय खड़े रहना और अधिक समय बैठे रहना, दोनों ही स्थितियाँ हमारे अस्थिपंजर को विकृत कर देती हैं। रीढ की हड्डी का तो बाजा ही बज जाता है। बन्दर के बच्चे हमारे लिये उदाहरण होने चाहियें। वैसे हमारे शिशु भी कोई कम नहीं हैं। महत्वपूर्ण प्रश्न हैं : कार्यस्थलों और टी वी रूमों का क्या करना चाहिये ?

● मनुष्यों ने दीर्घकाल तक बिना वस्त्रों के सहज जीवन व्यतीत किया है। यूँ भी, बिना वस्त्रों के शरीर सुन्दर है। वस्त्र एक बोझ तो हैं ही फिर भी, वस्त्र पहनने ही हैं तो कम-से-कम कष्ट देने वाले कपड़े पहनें।

● सामान्य तौर पर इच्छा-पसन्द-उमंग जीवन की तरंग हैं। कई रंगों का होना जीवन को सहज ही आनन्ददायक बनाता है। एकरूपता कैसी भी हो, उससे उकताना-बिदकना स्वाभाविक है। यह बात गाँठ में बाँधने वाली है कि बारम्बार एक ही तरह से पैर की दाब देना, एक ही ढँग से हाथ चलाना, एक ही प्रकार का बोलना-चालना नीरसता की कुँजी है। मुहावरा पुराना है पर कोल्हू का बैल बने जीवन में फच्चर डालना उमंग के लिये जगह बनाना है।

● जीवन में बचपन, युवावस्था, वृद्धावस्था स्वाभाविक हैं। इन के अपने-अपने दौर और खासियतें हैं। बचपन को सिकोड़ना, युवावस्था को लम्बा करना, वृद्धावस्था से भय खाना और उसे नकारना-छिपाना सब के लिये आफत ही आफत लिये हैं। अपने बच्चों के बचपन को छीनने से बचने के कुछ प्रयास तो कोई भी कर सकती-सकता है। ठीक है ना ?

● सामान्य तौर पर तो सहज क्रियाओं में बाधा पड़ने पर ही हम बीमार पड़ते हैं। विश्राम उपचार के बेहतरीन तरीकों में है। शरीर को समय दीजिये। तन और मन की सुनिये। लाखों-करोड़ों वर्ष का अनुभव है जीवन को स्वयं को ठीक करने का। जहाँ तक हो सके दवाओं से बचें। दवाईयाँ अक्सर एक पहलू पर ध्यान केन्द्रित कर उपचार के दौरान अन्य बीमारियाँ संग लिये हैं।

सम्बन्धों और मन की कुछ सहज बातें आगे फिर कभी।

कालपी से –

2 अक्टूबर 1975 ई. को गठित किये गये झांसी डिवीजन जल संस्थान में उ.प्र. के 4 जिले (झांसी, ललितपुर, महोबा, जालौन) शामिल हैं। शुरू से ही इसमें पम्प चालकों का शोषण एवं उत्पीड़न किये जाने की परम्परा चली आ रही है। 40-45 दिन काम करने पर 1 महीने का वेतन दिया जाता है। कोई साप्ताहिक अवकाश नहीं देते हैं। साप्ताहिक अवकाश के दिन काम करने के लिये मात्र 15 रु. प्रति सप्ताह की दर से अधिकतम 75 रु. मासिक का भुगतान दिया जाता है।

कहने को तो एक यूनियन भी है किन्तु अधिकारी उसे "अमान्य" करार देते हैं फिर भी यूनियन के अध्यक्ष को "सन्तुष्ट" रखते हैं।

लिपिक वर्ग मनमानी करता है। अधिकारी वर्ग उन पर अंकुश नहीं लगा पाते क्योंकि लिपिक वर्ग अधिकारियों का विश्वासपात्र एवं राज़दार होता है। छोटे कर्मचारियों का शोषण एवं उत्पीड़न होता है। यदि कोई पम्प चालक कोर्ट जाता भी है तो अधिकारी कोर्ट के आदेशों तक की अवहेलना करते हैं। न्याय का लाभ भी प्रायः छोटे कर्मचारी नहीं प्राप्त कर पाते हैं।

अखबारों में विस्तार से समाचार छपते हैं फिर भी श्रम विभाग संज्ञान नहीं लेता है। मजदूरों से प्राप्त होती सैंकड़ों शिकायतों पर श्रम विभाग कार्रवाई नहीं करता। – रहमान, कालपी

महीने में एक बार छापते हैं, 7000 प्रतियाँ फ्री बाँटने का प्रयास करते हैं। मजदूर समाचार में आपको कोई बात गलत लगे तो हमें अवश्य बतायें, अन्यथा भी चर्चाओं के लिए समय निकालें। लिखें, मिलें।

कानून हैं शोषण के लिये
छूट है कानून से परे शोषण की

कानून : ●37-40 दिन काम करने पर 30 दिन की तनखा, अगले महीने की 7-10 तारीख तक दे ही देना; ●8 घण्टे की ड्युटी, तीन महीने में 50 घण्टे से ज्यादा ओवर टाइम काम नहीं, ओवर टाइम का भुगतान वेतन की दुगुनी दर से; ●*प्रतिदिन 8 घण्टे काम और सप्ताह में एक दिन की छुट्टी पर 01.01.2008 से हरियाणा सरकार द्वारा निर्धारित कम से कम तनखा प्रतिमाह इस प्रकार हैं : अकुशल मजदूर (हैल्पर) 3586 रुपये (8 घण्टे के 138 रुपये); अर्धकुशल अ 3716 रुपये (8 घण्टे के 143 रुपये); अर्धकुशल ब 3846 रुपये (8 घण्टे के 148 रुपये); कुशल श्रमिक अ 3976 रुपये (8 घण्टे के 153 रुपये); कुशल श्रमिक ब 4106 रुपये (8 घण्टे के 158 रुपये); उच्च कुशल मजदूर 4236 रुपये (8 घण्टे के 163 रुपये)। कम से कम का मतलब है इन से कम तनखा देना गैरकानूनी है।*

एस्कोर्ट्स मजदूर : " थर्ड प्लान्ट स्थित ई सी ई एल की पेन्ट शॉप में ठेकेदार के जरिये रखे मजदूरों को 8 घण्टे के 100, 110, 140, 190 रुपये देते हैं। जिन्हें 100 और 110 रुपये देते हैं उनकी ई.एस.आई. नहीं, पी.एफ. नहीं।

" थर्ड प्लान्ट की कैन्टीन के मजदूरों की ड्युटी रोज 12 घण्टे से ऊपर हो जाती है। ठेकेदार के जरिये रखे इन मजदूरों को ओवर टाइम के कोई पैसे नहीं देते। भोजन और मात्र 3000 रुपये महीना देते हैं।

"थर्ड प्लान्ट के गेट के बाहर स्टैण्ड पर ठेकेदार के जरिये रखे 7 मजदूरों की तनखा 2500 रुपये।"

पेप्सी श्रमिक : " गली नं. 1 कृष्णा कॉलोनी, सैक्टर-25 स्थित पेप्सी गोदाम में हम 18 मजदूर काम करते हैं और इस समय (9 अगस्त) हम सब बीमार हैं। छुट्टी नहीं देते। इलाज के लिये पैसे भी नहीं देते। पेप्सी गोदाम में हम लेटे पड़े रहते हैं, गाड़ी लदवाने और खाली करने के काम धक्के दे कर हम से करवा रहे हैं। हमारी ई.एस.आई. नहीं है। तनखा 1800-2000 रुपये है।"

सीमेन्ट रिसर्च इन्सटीट्युट (एन सी बी) कामगार : " मथुरा रोड़ पर गुडईयर टायर फैक्ट्री के सामने संस्थान में ठेकेदारों के जरिये रखे मजदूरों की तनखा से ई.एस.आई. व पी.एफ. के पैसे काटते हैं और अधिकतर को ई.एस.आई. के कच्चे कार्ड दे देते हैं। 45 अथवा 90 दिन में ब्रेक कर ही देते हैं और एक-डेढ महीने बाद फिर रख लेते हैं पर फण्ड के पैसे निकालने का फार्म नहीं भरते – कहते हैं कि 3 महीने तक कोई फण्ड नहीं मिलता। हम मजदूरों के फण्ड के पैसे खा जाते हैं। जनवरी से देय महँगाई भत्ते के 76 रुपये गार्डो को ठेकेदार ने दे दिये। सफाई कर्मियों व कम्प्युटर ऑपरेटरों को ठेकेदार ने महँगाई भत्ते के पैसे तब जा कर दिये जब इन वरकरों ने श्रम विभाग से पत्र ला कर दिखाया। तीसरे ठेकेदार ने जुलाई की तनखा में 76 रुपये दिये और जनवरी-जून के डी.ए. के पैसे देने से मना कर दिया है।"

ग्लोब कैपेसिटर वरकर : " 30/8 इन्डस्ट्रीयल एरिया स्थित फैक्ट्री में 10 घण्टे = 8 घण्टे। सरकार द्वारा निर्धारित न्यूनतम वेतन 8 घण्टे की बजाय 10 घण्टे ड्युटी पर देते हैं। फैक्ट्री में 12-12 घण्टे की दो शिफ्ट हैं और 2 घण्टे को ओवर टाइम कहते हैं तथा उनका भुगतान भी सिंगल रेट से। कार्य के दौरान दस्ताने और मास्क नहीं देते पर इधर 26 अगस्त को ऑडिट वाले आये तो उनके सम्मुख कुछ मजदूरों से जबरन कहलवाया कि दस्ताने व मास्क देते हैं।"

कोचर एग्रो मजदूर : " प्लॉट 112 सैक्टर-59 स्थित फैक्ट्री में 100 मजदूरों में 50 की ई.एस. आई. व पी.एफ. नहीं। फैक्ट्री में प्राथमिक उपचार का प्रबन्ध नहीं। हैल्परों की तनखा 2800-3000 रुपये। ड्युटी 12 घण्टे की और ओवर टाइम के पैसे सिंगल रेट से। डराने-धमकाने के लिये फैक्ट्री में एक गुण्डा रखा है। गुण्डे की हरकतों के विरोध में मजदूरों ने काम बन्द किया तब कम्पनी ने 200-300 रुपये तनखा बढाई और आश्वासन दिया कि कोई मारपीट नहीं करेगा।"

सुपर ऑटो श्रमिक : " प्लॉट 13 सैक्टर-6 स्थित फैक्ट्री में हम 600 मजदूर 12-12 घण्टे की दो शिफ्टों में **यामाहा** और **हीरो होण्डा** मोटरसाइकिलों के पुर्जे बनाते हैं। हम में हैल्परों की तनखा 2200-2500-3000 और ऑपरेटरों की 3000-4000 रुपये। ओवर टाइम के पैसे सिंगल रेट से। ई.एस.आई. व पी.एफ. हम मजदूरों में किसी की नहीं हैं, एक-आध की हों तो पता नहीं। इधर कोई जाँच आने की बात चली, मैनेजमेन्ट ने दो-तीन दिन पहले कागज-पत्र जला दिये हैं।"

भास्कर रिफ्रैक्ट्रीज कामगार : " 12/6 मथुरा रोड़ स्थित फैक्ट्री में जनवरी से देय महँगाई भत्ते के 76 रुपये नहीं दिये हैं।"

शक्ति हाईटेक मजदूर : " 54 संजय मेमोरियल इन्डस्ट्रीयल एस्टेट स्थित फैक्ट्री में हम 100 वरकर 12-12 घण्टे की दो शिफ्टों में काम करते हैं। हैल्परों की तनखा 1800-2200 तथा ऑपरेटरों की 2500-3200 रुपये और ओवर टाइम के पैसे सिंगल रेट से। ई.एस.आई. व पी. एफ. एक-दो बहुत पुराने मजदूरों की होंगी।"

सीट्ज टैक्नोलोजीज श्रमिक : " प्लॉट 38 सैक्टर-6 स्थित फैक्ट्री में ठेकेदारों के जरिये रखे हम 250 मजदूरों को जुलाई की तनखा 25 अगस्त को दी। वेतन हर महीने देरी से देते हैं। जनवरी से देय डी.ए. के 76 रुपये नहीं दिये हैं।"

जे एल ऑटो पार्ट्स कामगार : " 14 इन्डस्ट्रीयल एरिया स्थित फैक्ट्री में 12-12 घण्टे की दो शिफ्टों में पाँच-छह सौ मजदूर काम करते हैं जिनमें कुछ बच्चे भी हैं। ई.एस.आई. व पी.एफ. 100 से कम की हैं। तनखा 2000-2300 रुपये और ओवर टाइम के पैसे सिंगल रेट से। फैक्ट्री में कैन्टीन नहीं है, गाली और मारपीट हैं।"

एस पी एल इन्डस्ट्रीज वरकर : " प्लॉट 22 सैक्टर-6 स्थित फैक्ट्री की एक्सपोर्ट लाइन में हद से ज्यादा काम का जोर है। क्षमता की कोई सीमा होती है – 250 पीस का उत्पादन दे सकते हैं तो 750 के लिये दबाव डालते हैं। भद्दी-भद्दी गाली देते हैं। कितनी भी दिक्कत हो, एक दिन की छुट्टी नहीं देते – उन्हें सिर्फ काम से मतलब रहता है। अचानक शिफ्ट बदल देते हैं – सुबह फैक्ट्री पहुँचने पर कहते हैं रात को आना।"

भिक्षु पैकेजिंग मजदूर : " प्लॉट 273 सैक्टर-24 स्थित फैक्ट्री में हैल्परों की तनखा 2500 और ऑपरेटरों की 3000-3200 रुपये। एक शिफ्ट 12 घण्टे की, ओवर टाइम सिंगल रेट से। ई.एस.आई. व पी.एफ. 35 मजदूरों में 2-4 के ही।"

जगसन पाल फार्मास्युटिकल्स श्रमिक : " 12/4 मथुरा रोड़ स्थित फैक्ट्री में जनवरी से देय डी.ए. के 76 रुपये की बजाय कम्पनी 25 रुपये प्रतिमाह दे रही है।"

केसेलिक श्रेडर कामगार : "55 इन्डस्ट्रीयल एरिया स्थित फैक्ट्री में 25 स्थाई मजदूर और दो ठेकेदारों के जरिये रखे 275 वरकर काम करते हैं। महीने में 100 घण्टे ओवर टाइम, भुगतान सिंगल रेट से।"

ओरियन्ट टूल रूम वरकर : " प्लॉट 59 सैक्टर-6 स्थित फैक्ट्री में एक ठेकेदार के जरिये रखे 100 मजदूरों को 8 घण्टे के 80 रुपये देते हैं, ई.एस.आई. नहीं, पी.एफ. नहीं। इनचार्ज बहुत बदतमीजी से पेश आता है।"

गुडईयर टायर मजदूर : " मथुरा रोड़, बल्लभगढ स्थित फैक्ट्री में ठेकेदारों के जरिये रखे हम मजदूरों को जनवरी से देय महँगाई भत्ते के 76 रुपये नहीं दिये हैं।"

एस्सार स्टील श्रमिक : " 10 इन्डस्ट्रीयल एरिया स्थित फैक्ट्री में कम्पनी ने स्वयं 8-10 मजदूर भर्ती किये हैं और 100 को दो ठेकेदारों के जरिये रखा है। दो शिफ्ट 12-12 घण्टे की हैं, ओवर टाइम के पैसे सिंगल रेट से। हैल्परों की तनखा 2400 तथा ऑपरेटरों की 2800-3000 रुपये और ई.एस.आई. व पी.एफ. कुछ मजदूरों की ही। बारह घण्टे के दौरान चाय के संग दो मट्ठी देते थे पर इधर मट्ठी एक कर दी है।"

बोनी पोलीमर कामगार : " प्लॉट 9 ई सैक्टर-6 स्थित फैक्ट्री में दो ठेकेदारों के जरिये रखे हम 40 मजदूरों को जनवरी से देय डी.ए. के 76 रुपये नहीं दिये हैं।"

विक्टोरा टूल्स वरकर : "प्लॉट 46 सैक्टर-25 स्थित फैक्ट्री में हैल्परों की तनखा 2300-2500 और ऑपरेटरों की 3000-4000 रुपये। डेढ सौ मजदूर हैं – ई.एस.आई. कार्ड स्टाफ वालों को ही।"

पंक्चर कविता

नमकीन पसीने की धार,
नमकीन खून का स्वाद भी।
चप्पल की तरह घिस गयीं हथेली,
घिस गई जवानी।
कँगूरी उँगली पर उठाए
उधारी का पहाड़,
आँखों में सपनों का कुआँ,
छाती में चिमनी भर धुआँ लिए,
पापा सिलते फटे जूते,
रिपीयर करते पंक्चर
जुलूस में होते शामिल
'लाल झण्डे' के पीछे,
जैसे लेट आयी हुई मेरी बहन
ऐस्मबली लाईन में खड़ी होती है
सबसे पीछे।।

....

आज सुबह नहीं बजी सायरन,
फिर नहीं उगला चिमनियों ने धुआँ कभी।
उँगली पर गोवर्धन थामें,
लड़खड़ाने लगे हैं पापा के पैर।
खड़े-खड़े, बैठे-बैठे, ऊँघते-ऊँघते,
बड़बड़ाने लगे हैं अब वे अक्सर।
जिंदाबाद! जिंदाबाद!.......
" बंगाल के मेनचेस्टर में मजदूर राजा है"
ठठाकर हँसते हैं और –
अचानक गुस्सा कर –
भुनभुनाने लगते हैं –

....

हमारी वफादारी का तोहफा लॉक आउट

....

हमारे पसीने में पार्टी का अफीम मिल गया।
वर्तमान पंगु, भविष्य मर गया।
जनतंत्र में
संविधान का हम,
अब सिर्फ निकालते हैं ताजिया,
या फिर शरीक होते हैं हर साल
कुंभ मेले में –
नागा-बाबाओं की तरह।

बंद चक्का, बुझी चिमनियाँ
राजनीति के लौंडों की आवारागर्दी,
संसद के गुण्डों के आतंक के बावजूद
मैं जिन्दा हूँ।
और सिर्फ इसलिये कि –
आने वाली नस्ल सीख सके,
पसीने की तमीज।
पुख्ता कर सके अपने लड़ने के औजार।
मेहनत-ईमानदारी के बीच,
राजनीति घुसेड़कर,
एड्स का मेडल लिये घूमता हूँ मैं।
भारत के छौने मुझे देखें,
और संभल जाएँ,
इसलिए जिन्दा हूँ।।

– कंचन, कालिम्पोंग, दार्जिलिंग

Paul Lafargue, "The Right To Be Lazy" इन्टरनेट पर है।

गुड़गाँव से –

ईर्स्टर्न मेडिकिट मजदूर : "कम्पनी की फैक्ट्रियों में कैजुअल वरकरों को जुलाई की तनखा आज 30 अगस्त तक नहीं दी है। वेतन की बजाय 13 अगस्त को 1000 रुपये एडवान्स देने लगे तो प्लॉट 196 उद्योग विहार फेज-1 वाली फैक्ट्री में हो-हल्ला हुआ। पूरी तनखा दो की माँग उठी। अधिकारियों और मजदूरों में हाथापाई हो गई। कम्पनी ने पुलिस बुला ली।"

एशियन हैण्डीक्राफ्ट श्रमिक : " प्लॉट 310 उद्योग विहार फेज-2 स्थित फैक्ट्री में कागजों में हैल्परों की तनखा 3586 दिखाते हैं पर वास्तव में है 3000 रुपये। इन 3000 में से ई.एस.आई. व पी.एफ. काट कर 2500-2600 रुपये देते हैं। यही बात कारीगरों के साथ। गार्ड कम्पनी ने स्वयं रखे हैं और उनके साथ भी ऐसा ही – तनखा 3720 दिखाते हैं जबकि है 3200 रुपये। दस्तावेजों में नहीं होती पर फैक्ट्री में रात ड्युटी रहती है – 250 में से 50 मजदूर रात 2 बजे तक काम करते हैं। ओवर टाइम के पैसे सिंगल रेट से।"

कैलाश रिबन कामगार : " प्लॉट 403 उद्योग विहार फेज-3 स्थित फैक्ट्री में हैल्परों की तनखा 2000 रुपये, ई.एस.आई. नहीं, पी.एफ. नहीं। दो शिफ्ट हैं 12-12 घण्टे की, ओवर टाइम के पैसे सिंगल रेट से। सोने के नाम पर 4-8 घण्टे ओवर टाइम के उड़ा देते हैं। पाँच-छह सौ मजदूरों में 100-150 की ही ई.एस.आई. व पी.एफ. हैं। चार वर्ष से बोनस नहीं दिया है।"

प्योगनाम वरकर : " प्लॉट 666 उद्योग विहार फेज-5 स्थित फैक्ट्री में एक हजार से ज्यादा मजदूरों में से 30-40 कम्पनी ने स्वयं भर्ती किये हैं और बाकी को एक ठेकेदार के जरिये रखा है। ई.एस.आई. व पी. एफ. 200-300 की ही। जनवरी से देय डी.ए. के 76 रुपये नहीं दिये हैं। गाली बहुत देते हैं। इस समय काम मन्दा है अन्यथा पूरी रात भी लगवाते हैं – सुबह 8½ से अगले रोज सुबह 5 बजे तक काम करो, बीमार हो तब भी काम करो। और, भर्ती के लिये 200-300 रुपये रिश्वत।"

सेक्युरिटी गार्ड : " एच-118 हरकेश नगर, ओखला में कार्यालय वाली **डॉबरमैन सेक्युरिटी** के गार्ड गुड़गाँव में भी हैं। दो शिफ्टों में 12-12 घण्टे ड्युटी, कोई छुट्टी नहीं। ई.एस.आई. नहीं, पी.एफ. नहीं। तीसों दिन 12 घण्टे ड्युटी के 3500 रुपये। जून और जुलाई की तनखायें आज 30 अगस्त तक नहीं दी हैं – खर्चे के लिये 100-200 रुपये दे देते हैं।"

स्पार्क एक्सपोर्ट मजदूर : " प्लॉट 166 उद्योग विहार फेज-1 स्थित फैक्ट्री में महीने में 100-150 घण्टे ओवर टाइम। पैसे सिंगल रेट से और बहुत देरी से – जून में किये ओवर टाइम के पैसे 5 अगस्त को दिये। तनखा भी हर महीने देरी से। फैक्ट्री में काम करते 500 मजदूरों की ई.एस.आई. व पी.एफ. नहीं – सिर्फ स्टाफ वालों की हैं। कैन्टीन नहीं है, भोजन के लिये स्थान नहीं है, मशीनों की बगल में नीचे बैठ कर भोजन करना पड़ता है। मात्र एक लैट्रीन 500 मजदूरों के बीच।"

एस एण्ड आर एक्सपोर्ट श्रमिक : " प्लॉट 298 उद्योग विहार फेज-2 स्थित फैक्ट्री में 10 घण्टे = 8 घण्टे। हैल्परों को 8 की बजाय 10 घण्टे ड्युटी पर महीने के 3586 रुपये। शिफ्ट सुबह 9 से रात 8 की – इस में कोई ओवर टाइम नहीं। इसके बाद रात 12-1 तक जो रोकते हैं उसे ओवर टाइम कहते हैं, भुगतान सिंगल रेट से।"

मोडलामा कामगार : " प्लॉट 200 उद्योग विहार फेज-1 स्थित फैक्ट्री में सुबह 9 से रात 10 तो रोज काम करना पड़ता है, रात 2 बजे तक रोक लेते हैं। ओवर टाइम के पैसे सिंगल रेट से। जनवरी से देय डी.ए. के 76 रुपये नहीं दिये हैं। वेतन से ई.एस.आई. व पी.एफ. के पैसे काटते हैं पर साल-भर वालों को ई.एस.आई. कार्ड नहीं और नौकरी से निकालने पर फण्ड की राशि निकालने का फार्म नहीं भरते। बोनस नहीं देते। दिवाली से 2-4 दिन पहले 5-10 को छोड़ कर सब को निकाल देते हैं और फिर 2-4 दिन बाद भर्ती कर लेते हैं। फैक्ट्री में 500 मजदूर हैं पर कैन्टीन नहीं है।"

रोलैक्स ऑटो वरकर : " प्लॉट 303 उद्योग विहार फेज-2 स्थित फैक्ट्री में हैल्परों की तनखा 2500 रुपये और कारीगर पीस रेट पर। सुबह 9 से रात 8½ की ड्युटी रोज है और रात 1 बजे तक रोक लेते हैं। महीने में 100 घण्टे से ज्यादा ओवर टाइम – भुगतान सिंगल रेट से, पर किसी को सिर्फ बेसिक अनुसार तो किसी को पूरी तनखा पर। तीन रजिस्टर बना रखे हैं – ए और बी में नाम वालों की ई.एस.आई. व पी.एफ. हैं पर रजिस्टर सी में नाम वाले 50 की नहीं हैं। टंकी का पानी पीना पड़ता है और टंकी की सफाई नहीं। लैट्रीन बहुत गन्दी। मजदूर बीमार बहुत होते हैं। फैक्ट्री में **हीरो होण्डा** के पुर्जे बनते हैं। बोनस नहीं देते – पिछले वर्ष 15 नवम्बर को देने का वादा किया था पर दिया नहीं। तनखा 12 तारीख को देनी शुरू करते हैं और 'पैसे खत्म हो गये' कह-कह कर 30 तारीख तक खींच देते हैं।"

कलमकारी एक्सपोर्ट मजदूर : " प्लॉट 383 उद्योग विहार फेज-2 स्थित फैक्ट्री में बीच-बीच में 2 महीने का ब्रेक दिखाते रहते हैं जबकि वरकर लगातार काम करते रहते हैं। तनखा से ई. एस.आई. व पी.एफ. के पैसे काटते हैं पर फण्ड निकालने का फार्म भरते ही नहीं। कैन्टीन में चाय भी नहीं, सिर्फ बैठने की जगह है। डेढ हजार मजदूरों के लिये सिर्फ 6 लैट्रीन हैं, बहुत गन्दी रहती हैं। फैक्ट्री में **मदरहुड** का माल बनता है और साहब गाली देते हैं।"

इनकास इन्टरनेशनल, 142 फेज-1, हैल्पर तनखा 2800 व कारीगर 3000 रुपये, 150 में 10 की ई.एस.आई. व पी.एफ.; **धीर इन्टरनेशनल,** 299 फेज-2, तनखा से काटी पर 18 महीनों की पी.एफ. राशि जमा नहीं की; **प्रिमियम मोल्डिंग,** 185 फेज-1, ओवर टाइम के 7½ रुपये प्रतिघण्टा, डी.ए. के 76 रुपये नहीं दिये हैं; **सरगम एक्सपोर्ट,** 153 फेज-1, फण्ड निकालने का फार्म नहीं भर कर पी.एफ. खा जाते हैं, डी.ए. के 76 रुपये नहीं दिये हैं; **857 फेज-5,** हैल्परों को 12 घण्टे रोज पर 30 दिन के 4000 रुपये, ई.एस.आई. व पी.एफ. किसी मजदूर की नहीं, सिर्फ स्टाफ की हैं;......

घूमने की छुट्टी

मैं पिछले दो-तीन साल से आउटलुक ग्रुप की टूरिस्ट गाइड किताबों में लिखने का काम कर रहा हूँ। अलग-अलग जगहों के बारे में अपने अनुभव और जानकारी वहाँ जा कर लिखने होते हैं। कहाँ जाना है, किस प्रकार का लेख चाहिये, सम्पादक तय करते हैं; खर्चा कम्पनी की तरफ से। कुछ-कुछ अपनी इच्छा से लिखने का मौका होता है। एक लेख के लिये पाँच से दस दिन का काम हो जाता है, 4-6 हजार रुपया मिलता है। कुछ हिसाब से पैसा बहुत कम है, कुछ हिसाब से काफी है। इस से और लिखने के अन्य छुट-पुट काम से मेरा काम चल जाता है। घूमने का शौक भी है।

यह गाइड किताबें 30-40 हजार रुपये महीना से ज्यादा कमाने वालों के काम की हैं। इन के हिसाब से घूमने के लिये दो-तीन हजार रुपये दिन का खर्च कम-से-कम चाहिये। ज्यादा से ज्यादा की सीमा नहीं – लाखों में खर्च होता है। आजकल ऐसे घूमने वाले काफी लोग हैं – वरकर, मैनेजर, दुकानदार, सभी कैटेगरी में। अधिकतर लोग अपनी रोज़ाना ज़िन्दगी से "छुट्टी" के मौकों के इंतज़ार में रहते हैं। कुछ का कहना है कि वह जीते ही ऐसी "छुट्टियों" की खातिर हैं – मन, दिमाग, शरीर भूल कर रोज़ाना की ज़िन्दगी; और उस ज़िन्दगी को भुलाने के लिये (अन्यथा मन-दिमाग-शरीर से कुछ रिश्ता बनाये रखने के लिये) छुट्टी! घूमना ज़रूरत भी है, लोगों की इच्छा भी है, घूमने का फैशन भी है, इस में होड़ भी है।" तुम वहाँ गये हो ?", "मैंने अभी तक वह जगह नहीं देखी.... काश !"

मैंने अब ऐसी काफी जगह देखी हैं। इन पर्यटक-स्थलों पर रहने-खाने-घुमाने के तरह-तरह के होटल और कम्पनियाँ चलते हैं। कुछ लोग ऐसे व्यवसाय सिर्फ पैसा कमाने के लिये करते हैं ; कुछ कम-से-कम कहते हैं कि पैसा कमाने के साथ-साथ कुछ अच्छा काम भी कर रहे हैं; और कई लोग दिल से मानते हैं कि पैसा तो कमा रहे हैं पर साथ ही पर्यावरण/स्वास्थ्य/धर्म/परंपरा/वन्य-जीवन/आदि के लिये काम भी कर रहे हैं। काफी लोग जो होटल-कम्पनियाँ चलाते हैं, यह अच्छा मानते हैं कि वह रोज़गार उपलब्ध करा रहे हैं।

पर्यटन उद्योग में कई प्रकार के वरकर काम करते हैं – रसोई, सफाई, रेस्टोरेन्ट, गाइड, सेक्युरिटी, मालिश, आफिस के काम आदि। अमूमन देखा है कि वरकरों को 1½, 2, 2½, 3 हजार दिया जाता है। यानी घूमने वालों के एक दिन का कम-से-कम खर्च, या उससे भी कम, मजदूरों की महीने की तनखा। होटल और सरकारें कितना कमाते हैं, उस से तुलना भी नहीं करेंगे। काम के समय अजीब हैं, अनन्त भी। किसी पर्यटक को सुबह चार बजे उठ कर चिड़िया देखने जाना है, तो तब चाय चाहिये। कुछ को देर रात तक शराब की चुस्कियाँ लेनी हैं, और भोजन उसके भी बाद। छुट्टी में किसी प्रकार का खलल पसंद नहीं। ग्राहक अतिथि है, अतिथि देवता है या अतिथि ग्राहक है, ग्राहक से कमाई है; सब उसकी मर्जी से होना चाहिए। समय पर, अदब से और मुस्कुराहट के साथ हर चीज़ पेश हो। आखिर इतना पैसा किसलिये खर्च किया है। अधिकतर पैसा सरकारों, कम्पनियों, मैनेजरों के हिस्से जाता है। सब से ज्यादा भुगतना वरकरों के हिस्से आता है। – अमित, दिल्ली

नोएडा से –

एम ए डिजाइन मजदूर : "सी-26 सैक्टर-63 नोएडा स्थित फैक्ट्री में नये वरकर को काम करते कुछ समय हो जाता है तब कम्पनी उस पर ई.एस.आई. व पी.एफ. के प्रावधान लागू करती है। जितेन्द्र नाम का एक मजदूर 10.12.2007 को भर्ती किया गया था पर उसकी ई.एस.आई. व पी.एफ. 24.3.2008 से लागू की। जितेन्द्र 11 अगस्त को फैक्ट्री में कार्य कर रहा था जब दोपहर को उसे कार्यालय में बुलाया गया। अधिकारियों ने अँग्रेजी में एक फार्म पर हस्ताक्षर करने को कहा तो जितेन्द्र ने जो लिखा था उसे समझाने की कही। कम्पनी अधिकारी बस दस्तखत करने की कहते रहे तो जितेन्द्र ने फार्म माँगा ताकि हस्ताक्षर करने से पहले किसी पुराने मजदूर से फार्म में जो लिखा है उसे समझ सके। अधिकारी इस पर नाराज हो गये और गुस्से में गार्ड बुला कर जितेन्द्र को फैक्ट्री के बाहर निकाल दिया। साँय 6½ बजे शिफ्ट समाप्ति पर जितेन्द्र हमें गेट के बाहर मिला। कम्पनी के इस अन्याय-अत्याचार के खिलाफ हम ने जितेन्द्र को समर्थन व सहायता का आश्वासन दिया और उसे रोज आने के लिये कहा। जितेन्द्र 12 अगस्त से प्रतिदिन फैक्ट्री पहुँच रहा है और सुबह ड्युटी जाते समय, दोपहर भोजन अवकाश के दौरान, तथा साँय छूटने के समय हम सब जितेन्द्र से मिलते हैं। फैक्ट्री में चाय पहुँचाने वाले को मैनेजमेन्ट ने जितेन्द्र को दुकान पर नहीं बैठने देने को कहा। वह थोड़ा हट कर खड़ा होने लगा और हम उस से रोज तीन बार मिलते रहे। हमारे मिलने-जुलने का कम्पनी पर इतना असर पड़ा कि मैनेजमेन्ट ने पुलिस का सहारा लिया। सादी वर्दी में एक पुलिस वाला 27 अगस्त को आया और हाथ-पैर तोड़ने की धमकी दे कर जितेन्द्र को वहाँ दिखाई नहीं देने को कहा। कम्पनी के अन्याय-अत्याचार के खिलाफ जितेन्द्र का फैक्ट्री गेट पर आना जारी है और फैक्ट्री के अन्दर काम कर रहे हम लोग मैनेजमेन्ट की लगाम खींचने के उपायों पर आपस में चर्चा कर रहे हैं।"

आठवीं कक्षा छात्र

किसी से भी बात करने के लिये मेरे टाइम टेबल में समय नहीं है

(केन्द्रीय विद्यालय में आठवीं कक्षा में पढते 13 वर्षीय छात्र के लिये अगस्त माह में तीन दिन लगातार छुट्टी विशेष समय था। इलाहाबाद में इस बच्चे से हुई बातचीत के अंश देखिये और सोचिये।)

अध्यापक कहते हैं कि अब हम बड़े हो गये हैं, प्रतियोगिता बहुत है, लाखों-करोड़ों में अपनी जगह बनानी है इसलिये मेहनत करें। हमें समय के समुचित उपयोग वाली सी डी दिखाई गई और पुस्तकालय अध्यक्ष ने प्रत्येक को सलाह दी। टाइम टेबल हम ने स्वयं बनाये। अब हम बच्चे नहीं रहे, अपना भविष्य हम खुद देख सकते हैं।

मेरी समय-सारणी अनुसार सुबह 4 बजे उठना पर बिस्तर छोड़ने में 4½ हो ही जाते हैं। पढ़ना 4½ से 5½ तक। फिर विद्यालय जाने के लिये तैयार होना। बस 6½ बजे स्टॉप पर आती है और वहाँ पहुँचने में 5 मिनट लगते हैं। हमारे स्कूल में बस 7 बज कर 25 मिनट पर पहुँचती है। सुबेदारगंज से केन्द्रीय विद्यालय, मनौरी बीस किलोमीटर से अधिक दूर है और जाते समय बस अन्य स्कूलों में बच्चों को छोड़ते हुये अन्त में हमें उतारती है। हमारे स्कूल में छुट्टी अन्य विद्यालयों के बाद होती है इसलिये लौटते समय वहाँ से बच्चे पहले उठा कर बस हमें सीधे लाती है। विद्यालय में गुण्डागर्दी बहुत है – नौवीं से बारहवीं वालों द्वारा कुछ ज्यादा ही।

स्कूल सुबह 7½ से दोपहर एक चालीस तक। बस दो दस पर आती है और मैं दो पचास पर घर पहुँचता हूँ। कपड़े बदल कर तीन-साढे तीन तक भोजन। अध्यापकों द्वारा दिया कार्य 3½ से 5½ के दौरान करना। वैसे मेरे टाइम टेबल में यह समय ट्युशन के लिये है पर अभी उसका प्रबन्ध हुआ नहीं है।

साँय 5½ से 7, डेढ घण्टा मैंने खेल अथवा विश्राम के लिये रखा है। **मैं खेलता नहीं क्योंकि हारने व जीतने में, दोनों में गड़बड़ है। जीतने पर दूसरे को चिढाना शुरू कर देते हैं। हारने वाले झगड़ा कर लेते हैं, लड़-मरने को तैयार हो जाते हैं। हारने पर टीम वाले ही एक-दूसरे को दोष देते हैं। खेल वाली मस्ती होती ही नहीं। एक-दूसरे के दुश्मन बन जाते हैं।**

7 से रात 9 बजे तक पढाई। अगर अध्यापकों द्वारा दिया काम पूरा हो गया है तो कक्षा से आगे चलने के लिये अतिरिक्त पढते हैं। अध्यापक के पढाने से पहले पढते हैं ताकि कक्षा में ठीक से समझ में आये।

फिर भोजन कर सो जाता हूँ – अगले रोज सुबह 4 बजे उठने के लिये।

माँ-पिता-बहन-भाई से बात करने का समय टाइम टेबल में है ही नहीं। बात कर ही नहीं पाते। घर में समय नहीं है, कक्षा में बात करो तो अध्यापक डाँटें। चुप रहने वाली बात ही रहती है। चुप रहते-रहते साइलेन्ट हो जाते हैं, लैटर बॉक्स में पड़ी चिट्ठियों की तरह हो जाते हैं जो साथ-साथ रहती हैं पर एक-दूसरे से बात नहीं करती, न ही एक-दूसरे से मतलब रखती, बस अपनी-अपनी मंजिल तक पहुँचने का इन्तजार करती रहती हैं।

स्वत्वाधिकारी, प्रकाशक एवं सम्पादक शेर सिंह के लिए जे० के० आफसैट दिल्ली से मुद्रित किया।

RN 42233 पोस्टल रजिस्ट्रेशन L/HR/FBD/73-2011